86वां भारतीय वायुसेना दिवस

1947 भारत-पाक युद्ध के हीरो डकोटा ने पहली बार विंटेज परेड में हिस्सा लिया; कबाड़ हो चुके इस प्लेन को रिस्टोर करने में 6 साल लगे

इसी साल 25 अप्रैल को डकोटा रिनोवेट होने के बाद भारत पहुंचा था

गाजियाबाद | दिल्ली से सटे गाजियाबाद के हिंडन एयरबेस पर सोमवार को वायुसेना के जांबाजों ने करतब दिखाए। मौका 86वें वायुसेना दिवस का था। आकाशगंगा की टीम ने 8 हजार फीट की ऊंचाई से छलांग लगाकर कार्यक्रम की शुरुआत की। सूर्य किरण और सारंग टीम ने भी करतब दिखाए। हालांकि दूसरे विश्वयुद्ध के समय के प्लेन डकोटा डीसी ने सबका ध्यान खींचा। एयर शो में वायुसेना के अत्याधुनिक विमान जगुआर, ग्लोबमास्टर, मिराज, सुखोई, मिग-21, मिग-29, तेजस समेत कई एयरक्रॉफ्ट ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में तीनों सेना के प्रमुख समेत राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मौजूद रहे। पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंडुलकर लगातार तीसरी बार शो देखने पहुंचे। वायुसेना ने उन्हें मानक ग्रुप कैप्टन की रैंक दी है।

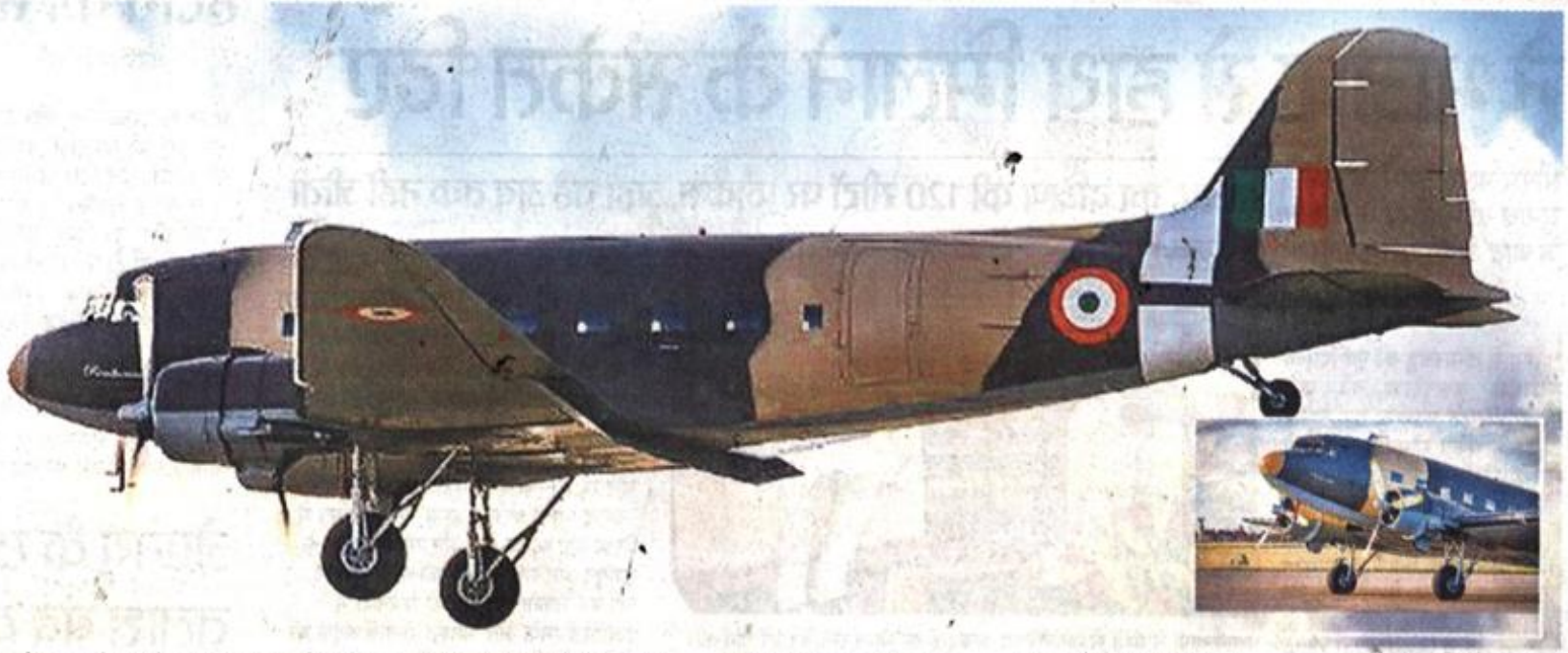

डकोटा न होता तो श्रीनगर भी हाथ से निकल सकता था

इस बार एयरफोर्स परेड का मुख्य आकर्षण डकोटा प्लेन रहा। दूसरे विश्व युद्ध और 1947 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान अहम भूमिका निभाने वाले प्लेन को रिस्टोर किया गया है। कबाड़ में पहुंच चुके इस विमान को ब्रिटेन में रिस्टोर किया गया है।

- 1947 के भारत-पाक युद्ध में डकोटा ने सैनिकों को कश्मीर तेजी से भेजा, जिससे पाक घुसपैठियों को करारा जवाब दिया जा सका।
- 1930 में रॉयल इंडियन एयर फोर्स में शामिल किए गए इस प्लेन ने 1971 के युद्ध में बांग्लादेश की मुक्ति में अहम भूमिका निभाई।
- 2011 में सांसद चंद्रशेखर को कबाड़ हो चुका प्लेन मिला था। इसे रिस्टोर करने में 6 साल लगे और इसे सेना को सौंप दिया गया।